तृतीय : पाठः - आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः

सन्दर्भ -बृहदारण्यकोपनिषद् से उद्धृत यह गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक ' संस्कृत दिग्दर्शिका ' के ' आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः ' शीर्षक से लिया गया है ।

- याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच-
  याज्ञवल्क्य मैत्रेयी से बोले –
- मैत्रेयि ! उद्यास्यन् अहम् अस्मात् स्थानादस्मि ।
  मैत्रेयि ! मैं इस स्थान (गृहस्थाश्रम) से ऊपर जा रहा हूं ।
- ततस्तेऽनया कात्यायन्या विच्छेदं करवाणि इति ।
  अतः तुम्हारा इस कात्यायनी से बटवारा कर दूं ।
- मैत्रेयी उवाच - यदीयं सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्
  मैत्रेयी बोली – यदि यह सम्पूर्ण पृथ्वी धन से पूर्ण हो जावे
- तत् किं तेनाहममृता स्यामिति ।
  तो क्या मैं उससे अमर हो जाऊंगी ।
- याज्ञवल्क्य उवाच - नेति ।
  याज्ञवल्क्य बोले - ' नहीं ' ।।
- यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात् ।
  जैसा साधन - सम्पन्न धनिकों का जीवन होता है , वैसा ही तुम्हारा भी जीवन होगा
- अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति ।
  धन से अमरता की तो आशा नहीं है ।
- सा मैत्रेयी उवाच- येनाहं नामृता स्याम्
  उस मैत्रेयी ने कहा – जिस धन से मैं अमर नहीं हो सकती
- किमहं तेन कुर्याम् ।
  उससे मैं क्या करूं ?

- यदेव भगवान् केवलममृतत्त्वसाधनं जानाति ,
  अतः आप जो अमरता का केवल साधन जानते हैं
- तदेव मे ब्रूहि ।
  उसी को मुझसे कहिए ।
- याज्ञवल्क्य उवाच - प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे ।
  याज्ञवल्क्य बोले — तुम हमारी प्रिय हो , तुम प्रिय बात कह रही हो ।
- एहि , उपविश , व्याख्यास्यामि ते अमृतत्त्वसाधनम् ।
  आओ , बैठो , तुम्हारे लिए अमृत के साधन की व्याख्या करूंगा ।
- याज्ञवल्क्य उवाच- न वा अरे मैत्रेयि !
  याज्ञवल्क्य बोले — अरी मैत्रेयि !
- पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति ।
  पति की इच्छा पूर्ति के लिए पति प्रिय नहीं होता ,
- आत्मनस्तु वै कामाय पति : प्रियो भवति ।
  अपनी इच्छा पूर्ति के लिए पति प्रिय होता है ।
- न वा अरे , जायायाः कामाय जाया प्रिया भवति ,
  इसी प्रकार पत्नी की कामना पूर्ति के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती
- आत्मनस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति ।
  अपनी ही इच्छा पूर्ति के लिए पत्नी प्रिय होती है ।
- न वा अरे पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय
  अरे पुत्र अथवा धन की कामना से
- पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति
  पुत्र या धन प्रिय नहीं होता है ,,
- आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति ।
  अपनी ही कामना पूर्ति के लिए पुत्र अथवा धन प्रिय होता है ।
- न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति ,

अरे ! नहीं सभी की कामना से सभी प्रिय होते हैं ,

- आत्मनस्तु वै कामाय सर्वं प्रियं भवति ।
  अपनी ही कामना पूर्ति के लिए सब प्रिय होते हैं ।
- तस्माद् आत्मा वा अरे मैत्रेयि !
  इसलिए हे मैत्रेयि ! आत्मा ही
- द्दष्टव्य : दर्शनार्थं श्रोतव्यः , मन्तव्यः
  देखने योग्य , दर्शन हेतु , सुनने योग्य , मनन हेतु
- निदिध्यासितव्यश्च ।
  और ध्यान करने हेतु है ।
- आत्मनः खलु दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति ।
  निश्चय ही आत्म दर्शन से यह सब ज्ञान होता है ।